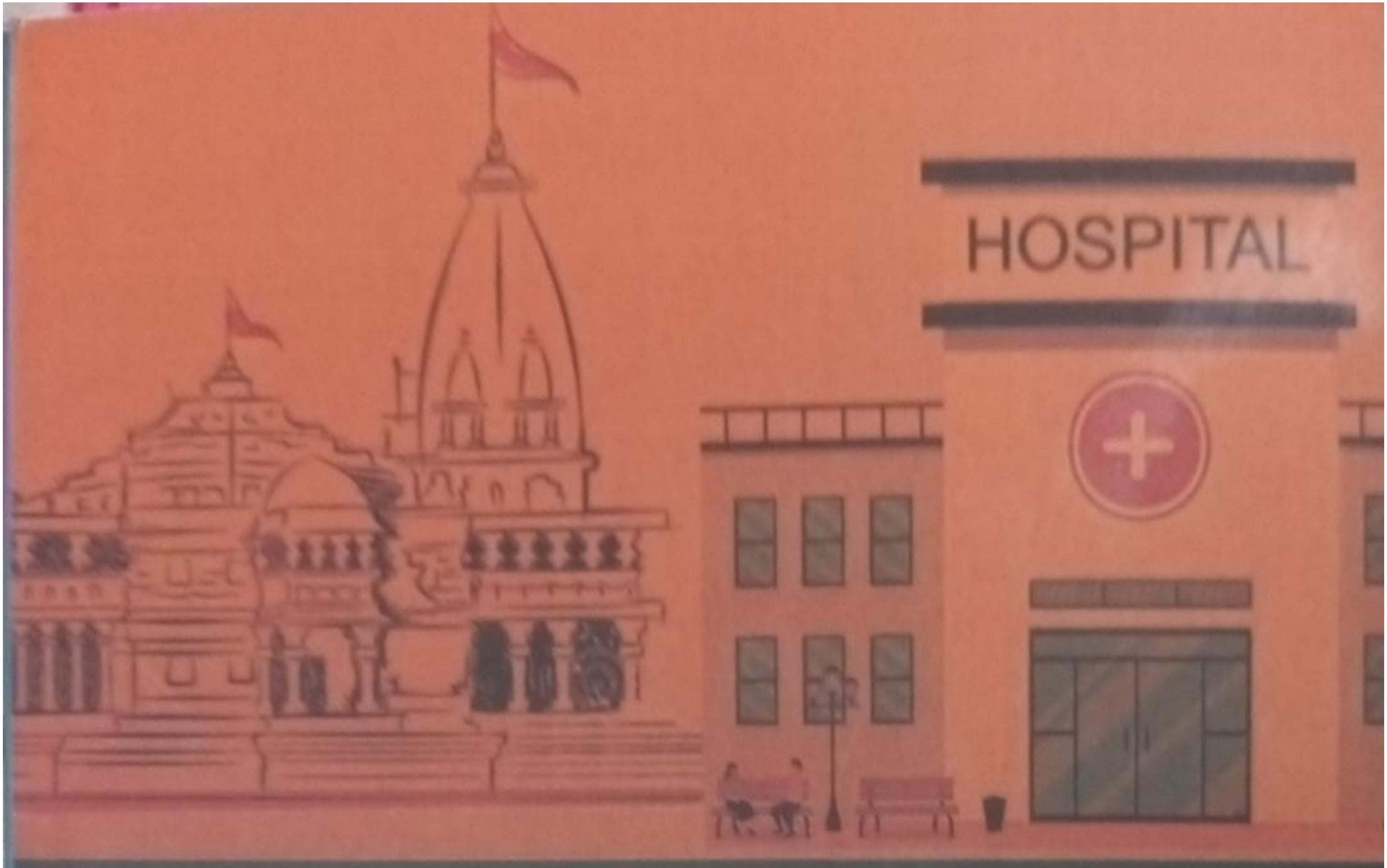

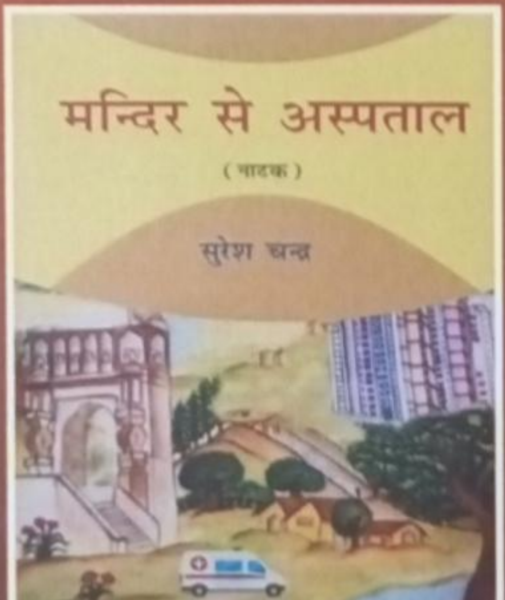

मन्दिर से अस्पताल : मूल्यांकन के विविध आयाम

संपादक : हरिराम

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

वर्तमान पता :
मकान संख्या - 19, भूतल, खसरा संख्या - 65,
गली नम्बर - 1, निकट बालाजी प्रॉपर्टी ऑफिस,
कौशलपुरी, चौहान पट्टी, दिल्ली - 110094

प्रथम संस्करण	:	2023
आवरण चित्र	:	दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात'
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी. एस. ऑफसेट, दिल्ली

© **संपादक**

ISBN : 978-93-91570-00-0
मूल्य : 205 रुपये

मंदिर से अस्पताल : मूल्यांकन के विविध आयाम(आलोचना) - संपादक हरिराम

Mandir Se Aspataal : Mulyankan Ke Vividh Ayaam (Crticisim) Edited by Hariram

अनुक्रम

भूमिका 07

1. तकनीक और आस्था का द्वन्द्व ('मन्दिर से अस्पताल' नाटक के संदर्भ में) 09
: आशुतोष यादव

2. 'मंदिर से अस्पताल' नाटक के द्वारा दलितों के उत्थान के लिए संघर्ष करती हुई नायिका - करुणा बौद्ध 16
: प्रा. ऐश्वर्या बाघमारे

3. मंदिर से अस्पताल : समकालीन यथार्थ एवं कालबोध 16
: अस्मिता पटेल

4. प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में प्रतिव्यवस्था - 'मंदिर से अस्पताल' नाटक 31
: प्रो. डॉ. बाळासाहेब सोनवणे

5. 'मंदिर से अस्पताल' नाटक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण 37
: विभीषण कुमार

6. मंदिर से अस्पताल - आपदाकालीन समाधान की ओर 45
: डॉ. दीनीनाथ

7. तकनीकी और धर्म का द्वन्द्व - 'मन्दिर से अस्पताल' 54
: ममता यादव

8. मानवाधिकार की कसौटी पर 'मन्दिर से अस्पताल' नाटक 61
: मनीषा यादव

'मंदिर से अस्पताल' नाटक के द्वारा दलितों के उत्थान के लिए संघर्ष करती हुई नायिका - करुणा बौद्ध

- प्रा. ऐश्वर्या वाघमारे

किसी भी युग में जो साहित्य धारा निर्मित होती है, उसे लेके काफी मत भिन्नता रहती है। उसपर अनेक तर्क वितर्क और विचार होने लगते हैं। उसी प्रकार वर्तमान समय में दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है एक और विचार है जिस पर काफी मात्र में सोचा जाने लगा है। साहित्य जगत में जब कोई नए विचार को रूपांतरित किया जाता हैं तब नई तर्कपूर्ण सोच उभरकर सामने खड़ी हो जाती है। दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो अपना अस्तित्व स्थापित करने की कोशिश की है, और उसके वजूद को ही असहमत किया गया है इसको हम नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं, पर फिर भी इन सभी तूफानों को पार कर दलित साहित्य ने केवल भारतीय साहित्य में ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य में भी अपना एक अलग वजूद सिद्ध किया है। ऐसे ही दलित साहित्य के घटना को सुरेश चंद्र जी द्वारा लिखित नाटक "मंदिर से अस्पताल" तक नाटक दलित साहित्य का एक हिस्सा है। यह नाटक मैंने पढ़ने के लिया तो इसका शीर्षक पहिले मुझे आकर्षित किया। क्योंकि मुझे इस नाटक के शीर्षक के वजह से ही कुतुहल जागृत हुआ। मन में सवाल आया कि 'मंदिर से अस्पताल' तक यह नाटक आखिर है क्या? इसका शीर्षक ऐसा कैसा हैं? पर शुरआत में इस नाटक को पढ़ते समय मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पर बाद मैं पढ़ते-पढ़ते मुझे इस नाटक के परत दर परत खुलते गए और, इस नाटक को समझने लगी और समझते समझते मुझे यह नाटक बेहद आकर्षित लगा। यह नाटक करुणा बौद्ध दलित लड़की पर केंद्रित है। उसका दलितों के प्रति विशेष ध्यान और प्रेम के साथ ही उनके हक के लिए

उसका द्वंद्व मुझे काफी आकर्षित लगा। करुणा बौद्ध के पिता का उसके बहुत ही कम उम्र में सिविल लाइन की सफाई करते समय मौत हो जाती है। लेकिन वो हिम्मत नहीं हारती, वह अपने बलबूते पर खुद की पढ़ाई करती है। वह खुद को सिद्ध करती है। और साथ ही साथ अपने समाज का उद्धार भी करती है। अपने समाज को जागृत भी करती है द्य समाज को जागृत करने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम भी करती है। मुझे इस नाटक में यह भाग बहुत ही अच्छा लगा कि नाटककार ने एक छोटी सी लड़की को इतनी हिम्मत इतनी संभलता भरी है कि वह कभी भी हारते हुए दिखती ही नहीं है। वह खुद तो हारती तो है ही नहीं पर साथ ही खुद के समाज को भी वह हारने नहीं देती है। उनके लिए हमेशा कुछ ना कुछ प्रयत्न करके उनको भी आगे बढ़ाती है और खुद भी आगे बढ़ती है। अपने परिवार का भी वह ध्यान रखती है। यह मुझे नाटक के माध्यम से अच्छा लगा क्योंकि वह उसके स्वयं के समाज के लिए वह एक उदाहरण है ही पर दूसरे हर एक जाति के महिला के लिए भी एक अच्छा उदाहरण है। करुणा बौद्ध ने कम उम्र में हर एक युवाओं को उसने संदेश दिया है कि हिम्मत नहीं हारना चाहिए खुद के बल पर भी हम बहुत कुछ कर सकते हैं। यह उसने अपनी कृति से साबित भी किया है। उसने खुद के लिए तो किया ही किया पर साथ ही अपने समाज के लिए भी किया। उसने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों को वो संविधान दिवस के रूप में सब को अवगत कराती है जो प्रशंसा के योग्य है। क्योंकि उसने संविधान दिवस मनाया और उसने 100 संविधान ग्रंथों का वितरण भी किया। यह नाटककार ने बड़ी सजगता के साथ हमारे समक्ष रखा है। आज भी हमारे देश में बहुत से ऐसे लोग हैं जिनको यह पता ही नहीं कि संविधान क्या है? उसमें क्या लिखा है? उससे आज भी लोग अनभिज्ञ है। तो इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी सोच मुझे अच्छी लगी साथ ही बेहद ही आकर्षित भी लगी । तीर्थो, पूजाओं और मृत्युपूजाओं में जो धन बर्बाद होता है। इसके लिए दलितों को प्रेरित करने कि बात अंधविश्वास का त्याग यह बात की बेहद महत्वपूर्ण आज भी दलितों को है। यह इस नाटक के माध्यम से हमारे समक्ष रखकर फिर से दलितों को विचार करने के लिए विवश करती है। सुरेश चंद्र ने यह बात कहकर दलितों को प्रेरित ही किया है। साथ ही दलित लोगों को इतिहास से अवगत कराने की बात भी काफी अच्छी है। प्रोफेसर दीपक के माध्यम से 'दलित मीडिया होऊस' की स्थापना करने की बात भी काफी सराहनी है।

उक्त नाटक में कोरोना जैसे महामारी की स्थिति दर्शाकर नाटक का शीर्षक सार्थक होता दिखता है। इससे 'मंदिर से अस्पताल' तक इस नाटक से यह उजागर

होता है की, वाकई में मंदिर बनाने के बजाय अस्पताल बनाना चाहिए हां यही सही है। अस्पताल होना चाहिए क्योंकि कोरोना काल में हमने ऐसी स्थिति देखी है कि, लोग सड़क पर मर रहे थे, लोगों को बेड नहीं मिले थे। लोग तड़प रहे थे। कुछ लोग तो ऑक्सीजन न मिलने के कारण मर गए। ऐसी जो भयानक स्थिति में कोरोना ने हमें सिखाया है कि, हम को एक सबक लेना चाहिए। उस सबक के साथ हमको ज्यादा से ज्यादा अस्पताल खोलना चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति की निर्मिती अगर होती है तो हमें कोरोना जैसी स्थिति में हमने जो सामना किया है वह दोबारा निर्मिती ना हो द्य इसलिए अस्पतालों की संख्या हमें बढ़ाना चाहिए हमें मेडिकल कॉलेजों की संख्या भी बढ़ाना चाहिए। हमारे भारत देश में मेडिकल कॉलेज की कमी के कारण हमारे मेडिकल छात्र विदेशों में जाकर शिक्षा लेते हैं। जो हाल ही में रूस और यूक्रेन में युद्ध हुआ उसमें हमारे देश के मेडिकल के छात्र जिस तरह से फंसे थे उनको वहां से लाना बहुत ही मुश्किल हो गया था। उनको वहां पर जाना उनकी मजबूरी थी क्योंकि हमारे यहां मेडिकल कॉलेजों की संख्या कम थी जो मजबूरीवश उनको रूस और यूक्रेन का रुख करना पड़ा। आपने दिल पर पत्थर रखकर विदेशों की ओर पलायन करना पड़ता है। विदेशों में उनको इस तरह का सामना करना पड़ता है। बहुत से भारतीय विद्यार्थियों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी। इससे भी हमें सीख लेना चाहिए कि हमें ज्यादा से ज्यादा मेडिकल कॉलेज खोलना चाहिए ताकि हमारे देश के युवाओं को विदेशों के और पलायन नहीं करना पड़े। अगर इस नाटक के शीर्षक के बारे में कहा जाए तो मैं यह कहना चाहूंगी कि इस नाटक को मंदिर की ओर मोड़ देना समाज को एक अच्छा संदेश देते हुए दिखाई देता है। अगर हम कोई एक नेक काम करते है तो उसके फलस्वरूप कुछ समाज का हम उद्धार ही करते हैं। समाज का हित यानी हमारे स्वयं का हित उसमें शामिल होता है। 'मंदिर से अस्पताल' तक शीर्षक मुझे काफी आकर्षित ही किया है क्योंकि नाटककार ने सटीक बाण छोड़ा है। मंदिर ना होकर अस्पताल रहेंगे तो लोगों की जान बचेगी और उनको स्वास्थ्य सेवाएं अच्छे से उपलब्ध होगी जिससे हमारे देश की मृत्यु दर भी कम होगा। तो यह एक अच्छा सा सराहनीय कदम था जो मुझे काफी अच्छा लगा।

सुरेश चंद्र जी के नाटक में डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों का समावेश बहुत ही बारीकी से किया गया है। जिस तरह से डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने भारत में नारी सशक्तिकरण की संस्कृति का प्रतिपादन किया उसी तरह सुरेश चंद्र जी ने अपने नाटक में करुणा बौद्ध के द्वारा नारी सशक्तिकरण का उदाहरण दिया है। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी समाज की प्रगति का मूल्यांकन उस समाज की

नारियों की प्रगति के आधार पर करते थे। जिस तरह से संसद में उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया हिंदू कोड बिल इस बात का साक्षात प्रमाण है। वैसे तो सभी नारी या पुरुष वर्चस्व के कारण से जीवन जीने को विवश है किंतु दलित आदिवासी और पिछड़ी जातियों की नारी को स्तरीय उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। घर में सजातीय स्त्रियों का शोषण करते हैं और बाहर वर्ण वादी तथाकथित स्वर्ण समाज के लोग उनके प्रति और मानवीय व्यवहार करते हैं। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती के अवसर पर इस समस्या का समाधान का संकल्प लेना चाहिए। डॉ. भीमराव आंबेडकर जी के विचारो से प्रेरित होकर सुरेश चंद्र जी ने अपने नाटक में समाज को एक प्रेरणा देने का कार्य किया है जो मुझे नारी के प्रति एक उच्च दृष्टिकोण रखना प्रशंसनीय लगा। सुरेश चंद्र जी का 'मंदिर से अस्पताल' तक का सार पूरा नाटक पढ़ने से समझ में आ जाता है कि, किस तरह से दलित आदिवासी और पिछड़े समाज की अनेक समस्याएं है और उनमें मुख्य समस्या है शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्याएं क्योंकि शहर में अस्पताल पहुंचने के पहले ही मरीजों की मृत्यु हो जाती है। इसीलिए पास ही में या गांव में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। इसीलिए उन्होंने आह्वान किया है कि मंदिर की अपेक्षा अस्पताल या शैक्षणिक व्यवस्था खोली जाए जिससे लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं जल्दी से उपलब्ध होगी और मृत्यु दर भी कम होगी। इसके साथ ही शिक्षा से समाज सुशिक्षित होगा। शिक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से नारियों का विचार करें तो समाज में अनेक स्कूलों कॉलेजों की आवश्यकता है। साथ ही अस्पतालों की भी आवश्यकता है। वर्तमान व्यवस्था में नारी स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाता नहीं है। एक तो परिवार समाज के साथ ही वह खुद भी अपने स्वास्थ्य के प्रति सर्जक नहीं है। शिक्षा की बात करें तो दुय्यम स्तर पर परिवार में स्त्रियों का विचार किया जाता है। इसीलिए उक्त नाटक में स्वास्थ्य और शिक्षा के संदर्भ में जो सब सावित्रीक विचार किया गया है। स्त्रियों को केंद्र में रखकर उनको जागृत करने की आवश्यकता है। तब जाकर नारी सशक्तिकरण संभव होगा। इस दृष्टि से यह नाटक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

मंदिर से अस्पताल लेखक.. डॉ. सुरेश चंद्र

- प्रा. ऐश्वर्या वाघमारे

तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती

❑❑

हरिराम

जन्म : दिसंबर, 1979, गांव-पावटा, तहसील-कठूमर, जिला अलवर (राजस्थान)

शिक्षा : राजस्थान विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा जे. एन. यू. से उच्च शिक्षा प्राप्त।

गतिविधियाँ : भाषा, अरावली उद्‌घोष, दलित अस्मिता, मगहर, Praxis International Journal of Social Science and Literature, बेधड़क न्यूज, प्रतिबद्ध, समकालीन देशज, सम्यक पब्लिक भारत इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं में एक दर्जन से अधिक शोध आलेख, समीक्षाएं एवं कविताएं प्रकाशित। विभिन्न आलोचनात्मक पुस्तकों में शोध आलेख प्रकाशित। अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध-पत्र प्रस्तुति एवं शिरकत। विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में शिरकत।

प्रकाशित पुस्तकें : ये गाडियां लुहार (कविता संग्रह), रागदरबारी के राजस्थानी अनुवाद का भाषिक और सांस्कृतिक अध्ययन (आलोचना ग्रंथ), हिंदी दलित आत्मकथा : समाज और संस्कृति का मूल्यांकन (संदर्भ 1981 से 2011)।

संपादित ग्रंथ : हिंदी दलित आत्मकथाओं का समीक्षात्मक अध्ययन, समकालीन साहित्य में दलित चिंतन की अभिव्यक्ति, दलित आत्मकथा की आलोचना, दलित जीवन के विविध प्रसंग(दलित आत्मकथाओं के संदर्भ में), साहित्य में आदिवासी समाज, चिंतन की परंपरा और आदिवासी साहित्य, मुकेश मानस : रचनाधर्मिता और संस्मरण, जितेंद्र श्रीवास्तव की कविताओं में चेतना, प्रोफेसर श्योराज सिंह बेचैन की रचनाधर्मिता।

संपर्क सूत्र : म. नं. 24 बी, गली नं.-9, ब्लॉक ई एक्सटेंशन, श्याम विहार, फेज-I, नजफगढ़, नई दिल्ली-110043

मो. नं. : 8826541819

ईमेल : mhram09@gmail.com

अधिकरण प्रकाशन

नयी रचना नये विचार
अक्षर अक्षर आँखदार

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

ISBN : 978-93-91570-14-9

9 789391 570149